Dainik Jagran - News - Microsoft Internet Explorer

File Edit View Favorites Tools Help

Address http://ind.jagran.com/newssite/citynews.asp?storyid=2585286&cityid=44&stateid=1&lpageno=3

काफी समय से आत्महत्या के लिए सोच रहा था दीपक

जागरण संवाद केंद्र, गाजियाबाद

चौबीस वर्षीय दीपक शर्मा अब इस दुनिया में नहीं रहा। पत्नी के वियोग में उसने जान दे दी। उसके द्वारा लिखे गए सुसाइड नोट व दीवार पर लिखी इबारत से जाहिर होता है कि जान देने के लिए वह बहुत पहले से तैयारी कर रहा था। मंगलवार को दीपक ने सांस की डोर से नाता तोड़ लिया।

एफ-284 सेक्टर-12 विजयनगर निवासी गणेशी लाल शर्मा के पुत्र दीपक ने मंगलवार की सुबह पंखे से फांसी का फंदा लगा कर आत्महत्या कर ली। दीपक के कमरे से पुलिस को उसकी हस्तलिपि में लिखे दो पत्र मिले हैं। इसके अलावा दीवार पर भी दीपक ने अपने मरने की वजह साफ करने की कोशिश की है। हाथ से लिखे पत्र में अलग-अलग तिथियां पड़ी हैं। पहले पत्र पर 12 जुलाई व दूसरे पत्र पर 19 जुलाई की तिथि अंकित है। दीपक के पत्र से साफ है कि वह कमरे में बैठा-बैठा पत्र ही लिखता रहा है। उसके पत्र बताते हैं कि वह पत्नी के वियोग में अवसाद की उस स्थिति में पहुंच गया था जहां आकर उम्मीद के सारे चिराग गुल हो जाते हैं और कोई राह नहीं सूझती। उसके पत्रों से यह भी साफ है कि उसकी ससुराल की ओर से उसे दहेज को लेकर भी उत्पीड़नात्मक धमकियां मिल रही थीं। जिन्हें लेकर भी वह दहशत में था।

ऐसा नहीं है कि दीपक ने एक ही झटके में जान देने का निर्णय नहीं लिया था। पत्र लिखने के बाद भी मरने से दो दिन पहले दीपक अपनी पत्नी प्रीति को लेने अमरोहा गया था। जहां उसका अपने साले, सास व ससुर से जमकर विवाद हुआ था। ससुराल से खाली हाथ लौटने के बाद दीपक की मनःस्थिति शायद किसी से संवाद करने लायक भी नहीं बची थी। उसके परिजनों का भी यही कहना है कि अमरोहा से आने के बाद से ही वह गुमसुम बना हुआ था। दीवार पर लिखी इबारत शायद उसका अंतिम संदेश था। जिसे देख कर यही प्रतीत होता है कि वह अंतिम क्षणों में लिखा गया होगा। क्योंकि परिवार के अन्य सदस्य किसी न किसी काम से उसके कमरे में आते रहते थे। यदि यह इबारत पन्नों से पहले दीवार पर दर्ज होती तो उनकी इस पर नजर पड़ना स्वाभाविक था।

मनोविशेषज्ञ संजीव त्यागी का कहना है कि दीपक भी अन्य कई लोगों की तरह दहेज उत्पीड़नात्मक कानून से भयभीत था। उनका कहना है कि महिलाओं की सुरक्षा के लिए बना कानून पुरुषों के लिए घातक होता जा रहा है। कानून के तहत कार्रवाई करने की धमकी से एक व्यक्ति नहीं पूरा परिवार दहशत व अवसाद में आ जाता है। दीपक के मामले में उसके परेशान रहने की वजह पत्नी से सामंजस्य न बैठ पाना प्रतीत होता है। श्री त्यागी का कहना है कि सामंजस्य की कमी के लिए किसी हद तक पुरुष भी जिम्मेदार है। विवाह के समय पत्नी को ऐसे-ऐसे सपने दिखाये जाते हैं जिनका वास्तविकता से दूर का भी वास्ता नहीं होता। पत्नी जब वास्तविकता के धरातल पर उतरती है तो पति-पत्नी के बीच खटपट होने लगती है। तिल का ताड़ बनने लगता है। जिसकी परिणति इसी रूप में होती है। उनका कहना है कि समाज में आपसी सामंजस्य न होने, पत्नी का रूठ कर मायके जा बैठना, मायके वालों का दहेज का मुकदमा कायम करवाने की धमकी देना ऐसे कारण हैं जो व्यक्ति को अवसाद की उस सीमा तक ले जाते हैं जहां कोई भी पुरुष आत्मघाती कदम उठा सकता है। उनका कहना है कि ऐसी किसी भी स्थिति से बचने के लिए पीड़ित व्यक्ति या उसके परिजनों को मनोविशेषज्ञों की राय जरूर ले लेनी चाहिए।

[Wednesday, August 02, 2006 11:04:50 PM]

- समाचार
- पंचांग 2006
- धर्म मार्ग
- जूनियर जागरण
- 7272
- जरा हट के
- ग्रीटिंग्स
- साहित्य
- जागरण रेडियो
- ई-पेपर
- जागरण सखी
- आपकी बात
- जागरण यात्रा
- जागरण क्रिकेट
- सिने मजा
- मेरा जागरण
- वर्गीकृत
- जागरण जोश
- राशिफल
- चर्चा में
- खाना खजाना

प्रिंट करें

Uttar Pradesh

कुल समाचार : 40

- वेतन नहीं मिला तो जेवर चुरा लिए
- आरटीओ ठप रहा कामकाज
- 'खुद अपहरण का नाटक रचा दिनेश ने'
- अधीनस्थों को भेजने वाले अधिकारी दंडित होंगे : डीएम
- काफी समय से आत्महत्या के लिए सोच रहा था दीपक
- कथित मुठभेड़ के विरोध में जाम व धरना
- बिजली विभाग में पांच तबादले से और कम हुए अधिकारी
- अपहृत रेल कर्मी मैनपुरी में मुक्त
- गाजियाबाद में और अंदर मेट्रो ले जाने के प्रयास
- कार्यालय में एकाएक पहुंचा डिस्पैच रजिस्टर

पृष्ठ 1 2 3 4

C:\sachin_new\websi... | C:\WINDOWS\syste... | Gmail - [SaveIndianF... | Dainik Jagran - News ... | 100%